27-5-21 — zoom00 41 x 42 — 01:23:28

उमादे और अचले खीची की वार्ता —

अचलसिंह नाम था गढ़ ~~बिरसार~~ गागरन का राजा था।
खीची उनकी जात थी खिची (देवड़ा चौहान)
था और उमादे लड़की अनन्तराव सोंखले की
थी सोंखला (सोढ़ा) राजपूत हैं। अब इन दोनों
का सम्बन्ध सगाई हो गई। इनका समापन
का किस्सा है दोनो में मेल-मिलाप कम था
यह प्रेम मेल कम एक हार जोइन्द्र की पुरी का
था ~~को~~ उसी के कारण हार गले का था जो
पिछे उनके वचन के आधार पर हारापा हुआ था

उमादे ने दोहा कहा —

① सिन्ध सवा-लख मालवो, मैं जोया फिर-२ जोय
(साराश)
उमादेरी जोड़ी रो मैं बिन्द नी निरखो कोय
उमादे ने कहा कि सिन्ध प्रान्त से लेकर मालवो
जैपुर से लेकर अपने सम्बन्ध वास्ते किया परन्तु
उमादेरी बराबरी का बिन्द कोई नहीं मिला

फिर बाद गढ़ गागनर के राजा अचलसिंह से समन्ध हुआ जो अचलो-खीची के नाम से जानते हैं।

[जोसीजी ने कहा→]

① वागड़ बिन्द बारवाणो, मण्डवर ने पड़ीयार
उमादे री जोड़ीरो, ओणावत, परतार।

[उमादे ने कहा→]

② खीचीयो तणी कचेड़ी, घर हर माथो घेर
लाल मेवाड़ी उपरा, लो अचला गारेल।

[जोसीजी ने कहा→]

③ केशरीया चोखा किया, जोसी पूछण जाय।
अंनतराव रे आंगणो, अचला परणिजण आव।

अब वहां से बरात लेकर रवाना होगये
बाजा सतीसों बाजीया, ततकर बाजा तूर
अचलो बिन्द एसो बिणीयो, सावण घटा रो सूर।
अब बरात जाय पहुंची कोयला पास
सामने पड़ जात आई है।

[मगलीया मिरासी ने कहा →]

5 सांखला पड़ जाना आवीया, खीची आया जान,
का चन्दो आकाश मों, का भल हल उगो भाण -
शांराष
अब चंवरी चड़ीया है। चार फैरा कर
अब सिधे महल्ले गये है।

[उमादे ने कहा →]

8 परणीजे मेहल पधारा, बैठा पिलग बिछाय,
दिवाला सब झांपा पड़े, ओमा जोत अपार।

[अचले खीची ने कहा -]

9 अचले मुख सा यों कयो, सुण सांखली नार।
मुख पगो री मोजड़ी तूं उमादे उतार।

[उमादे ने कहा →]

10 उमा मुलके एम कयो, सुण खीची भरतार
तुझ पगो री मोजड़ी दासी उतारे का खवास

अचले खीची कहा -

11 उमा भाण इतरो कर, जितरो अंग समाय
लाख टके री मोजड़ी, पेरीजे पग माय-

[उमादे ने कहा -]

(10) थारो बाप जंगल री पातसा, डाडो (मारे) अनड़ अनुप

बात हुई भावा जोक ही, खीची हल खड़ लोक

[अचल खीची ने कहा -]

(11) गढ गागन री राजवी, घोड़ा तीस हजार.

तैं जोड़ी डावड़ी, म्हारे पाणी री पणिहार -

[उमादे ने कहा - ऽ.]

(12) बागो फुल अनेक हैं, उमों फूल अनार.

अचलो एराकी (घोड़े) म्हीचड़ीयोपिव रो हीरो

असवार. आपको इचानदाही घोड़ेपर सवार -

अचलो खीची जीत होकर अपने गांव

गढ़ गागन वापीस रवाना हो गये -

उमादे की सहेली झीमों दे थी चारण की

लड़की थी. दोनो सहेलीयों थी

उमादे ने अपनी सहेली झीमो को कागद

लिखकर भेजा -

[ओमादे ने कहा →]

(14) उमा कागद मोकलो, झीमो वेगी आय।
सुख दुख भेलो कारसों, म्हारो रुठोपिव मनाय।

झीमो चारण की लड़की ने कहा कि उमादे तुम 15 दिन रुकना और पन्द्रह दिन के बाद में जाकर आपका रुठापिया मनाकर मैं आऊगी अब दोनो सहेलियाँ 15 दिन के बाद रवाना होगई गढ़ गागरन की तरफ़।

[उमादे ने कहा →]

(16) चन्द माथे सो ढल गयो, हिरण ओ लुम्बा लाय
अचलो सिंह केहरी ज्यो, चल आसगों नीजाय

[अचले खीची ने कहा →]

(17) सोने फल री कटारी, उरे नी मारी जाय,
उमा पदम नागणी, पग छोरे ज्यो खाय।

[उमादे ने कहा →]

(18) उमा पदम नागणी, मोहणी मित्रकरपाल
होवे गारोड़ी बालमों, पदम नागणी झाल।

अब उमादे औळगियो दोनो सहेली अचलदे खीची के महल पधारे. वहां पर अचलदे खीची की पत्नीराणी ने कहा कि आप कौन हो तब उमादे. व भिगोदे कहा कि हम तो चारण के लड़कीयाँ है। तभी उस राणी ने कहा कि आपका हार मेरे को देदो मेरे वाला हार आपको दे दुं।

तभी हार अदला-बदली कर दिया—

[अचलदे ने कहा ~~पत्नी~~ राणी –]

(19) आगे हलायो अरटीयाँ, लारे भोसा बाढ़ मीत
हिवड़े हार हिलोलती, तनो अचलो तीजो चीत

~~पहेली~~ [उमादे ने कहा –]

(20) मैं हार दिया सेवा किया मेलो माण मरम
थों उमारस चखीयो नहीं, म्हारोले गोलबकरम

अब उमादे व अचलो खीची राणीयाँ होगये –